INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RSSB

LDC

लिपिक ग्रेड – II एवं कनिष्ठ सहायक

भाग – 4

इतिहास + संस्कृति (राजस्थान)

<u>प्रस्तावना</u>

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"RSSB LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"*** *को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"LDC (लिपिक ग्रेड-II एवं कनिष्ठ सहायक)"*** *में पूर्ण संभव मदद करेंगे।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp - https://wa.link/lrn74q

Online Order - http://surl.li/rbhbb

मूल्य : (₹)

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास	
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासक	19
3.	मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था	74
4.	आधुनिक राजस्थान	88
5.	राजस्थान में राजनैतिक जागरण	103
6.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	108
7.	विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आंदोलन	117
8.	राजस्थान का एकीकरण	129
	कला संस्कृति	
1.	राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं क्षेत्रीय बोलियाँ	134
2.	मेले एवं त्यौहार	145
3.	लोक संगीत एवं लोक नृत्य	157
4.	राजस्थानी संस्कृति, परम्परा एवं विरासत	177
5.	वेशभूषा एवं आभूषण	182
6.	राजस्थान के धार्मिक आंदोलन	184
7.	लोक देवियाँ एवं लोक देवता	192
8.	स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं	202

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

राजस्थान इतिहास के स्रोत

परिचय -

सामान्यतः इतिहासकार द्वारा अतीत की घटनाओं का गहन अध्ययन करके मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।

इतिहास का जनक हेरोडोटस को कहा जाता है वे एक इतिहासकार थे।

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है। मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिंधु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं । इस काल की लिपि को सर्पीलाकार लिपि कहते हैं क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी । इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं । इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की है। राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है । जिसमें लिखित स्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे वैदिक काल जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

प्राचीन इतिहास के स्रोत – पुरातात्विक एवं साहित्यिक स्रोत।

- **राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-**

  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने " हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।

  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं ।

  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय संहिता" था।

- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर

हेरोडोटस (मृत्यु 425 ई. पू.), यूनान के प्रथम इतिहासकार एवं भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने अपने इतिहास का विषय पेलोपोनेसियन युद्ध को बनाया था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक हिस्टोरिका थी।

राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।

- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले है।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। ४४३ ई. पूर्व का यह अभिलेख **केकड़ी जिले** की भिनाय तहसील के **बड़ली गाँव** के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह **अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।**

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।
- इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।
- शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है ।

मानमोरी का अभिलेख :-

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।
- राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।
- इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।
- इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों **(महेश्वर, भीम, भोज एवं मान)** के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डौर अभिलेख :-

- जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (९४६ ई.):-

- प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- यह बड़वा (अंता तहसील, बारां जिला) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- यह 3 यूप पर खुदा हुआ है ।

कणसवा का अभिलेख :-

- 738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।
- **राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है ।**

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- ९४४ ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।
- यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।
- इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।
- इस अभिलेख में '**बापा**' से '**महाराणा समरसिंह**' तक की वंशावली का उल्लेख है।
- इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।

किराडू का लेख :-

- 1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
- इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
- इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

- नयनचन्द्र सूरी द्वारा 14 सर्गों में लिखी हम्मीर महाकाव्य ग्रंथ में रणथम्भौर के चौहान शाखा के राजपूत राजाओं का लिपिबद्ध वर्णन मिलता है।
- अन्य जैन साहित्यों में **मेरुतुंग का प्रबंध चिंतामणि**, हेमरत्न सूरि का यमकुमार चौपाई, भाहुक का हरिमेखला, श्रीधर व्यास का पार्श्वनाथ चरित, हरिभद्र सूरि का समराइच्छ कथा, धुर्ताख्यान, यशोधर चरित, राजशेखर का प्रबंधकोष, **उद्योत्तन सूरि का कुवलयमाला,** हेमचन्द्र सूरि का देशीनाममाला, जयसिंह सूरि का कुमारपाल चरित, धर्मोदेशमाला आदि प्रमुख हैं ।

4. **फारसी साहित्य :-**

प्रमुख फारसी साहित्य

क्र.सं.	साहित्यिक रचना	रचनाकार	वर्णन
1.	तबकाते नासिरी	काजी मिनहाज-उस-सिराज	• यह पुस्तक जालौर एवं नागौर में मुस्लिम शासन के बारे में जानकारी प्रदान करती है ।
2.	ताज-उल-मासिर	हसन निजामी	• इस ग्रंथ से अजमेर नगर की समृद्धि एवं मुस्लिम आक्रमण से होने वाली बर्बादी का पता चलता है।
3.	तारीखे-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी	• इस ग्रंथ से हमें रणथम्भौर एवं उस पर होने वाले आक्रमण की जानकारी मिलती है।
4.	खजाईनुल-फुतुह (i) मुरात-उल-कमाल (ii) देवल रानी	अमीर खुसरो	• इस ग्रंथ से अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ व रणथम्भौर आक्रमण की जानकारी मिलती है।
5.	तारीख-ए-मुबारकशाही	याहया-बिन-अहमद-अब्दुलशाह –सर हिन्दी	
6.	तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा)	बाबर की आत्मकथा	(i) तुर्की भाषा में लिखित (ii) इसमें पानीपत के प्रथम युद्ध एवं खानवा युद्ध की जानकारी मिलती है।
7.	हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम (हुमायूँ की बहन)	• इस ग्रंथ से हुमायूँ के मेवाड़ एवं मारवाड़ शासकों के साथ संबंधों एवं शेरशाह सूरी से परास्त होने की जानकारी मिलती है।
8.	अकबरनामा	अबुल फजल	• इस ग्रंथ से राजस्थान के मेवाड़, कोटा, जयपुर, सांभर, अजमेर आदि नगरों में अकबर द्वारा करवाये गये कार्य एवं अकबर के साथ राजपूत राजकुमारियों के विवाह की जानकारी मिलती है।
9.	आईने-ए-अकबरी	अबुल फजल	• इस ग्रंथ से राजस्थानी वेशभूषा एवं वस्त्रों के नाम एवं राजस्थान में मनाये जाने वाले त्योहारों एवं मुद्राओं के बारे में जानकारी मिलती है।
10.	मुन्तखब-उत-तवारीख	अब्दुल कादिर बदाँयूनी	• इस ग्रंथ में हल्दीघाटी युद्ध का सजीव वर्णन मिलता है। इस ग्रंथ से हमें **हरकू / हरका बाई** का विवाह अकबर के साथ होने का, जौहर प्रथा एवं रक्षाबंधन पर्व का वर्णन मिलता है।
11.	तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास खाँ सरवानी	• मालदेव एवं शेरशाह के मध्य हुए गिरि-सुमेल युद्ध में लेखक स्वयं मौजूद था।
12.	इकबालनामा	मोतमिद खाँ	• इस ग्रंथ में शाहजहाँ द्वारा मेवाड़ में की गई हत्याओं एवं आर्थिक बर्बादी की जानकारी मिलती है।
13.	शाहजहाँ नामा	इनायत खाँ	• इस ग्रंथ में मुग़ल मेवाड़ संधि की जानकारी मिलती है।
14.	तारीख-ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ (अजमेर)	• इस ग्रंथ को **'नसबुल अनसाब'** के नाम से भी जाना जाता है।
15.	तबकात-ए-अकबरी	निजामुद्दीन अहमद	• यह ग्रंथ शेरशाह की सेना के टुकड़ी के नागौर पहुँचने की जानकारी प्रदान करता है ।

16.	फतूहात-ए-आलमगीरी	ईसरदास नागर	• इस ग्रंथ से **दुर्गादास राठौड़** की कूटनीतिज्ञता का पता चलता है ।
17.	तुजुक-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर	• यह जहाँगीर की आत्मकथा है जिसमें आमेर के राजा भगवन्तदास का नाम भगवानदास लिखा है।
18.	तजकिरात-उल-वाकेयात	जौहर आफतावची	
19.	तारीख-ए-रशीदी	मिर्जा हैदर दोगलत	
20.	पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी	
21.	आलमगीरनामा	मोहम्मद काजिम	
22.	मुनव्वर-ए-कलाम	**शिवदास**	

पुरालेखीय स्रोत :

इन स्रोतों में शासकीय एवं अर्द्धशासकीय आदेश, पत्र, हिसाब, बहियाँ आदि प्रशासनिक कार्यों से जुड़ी लिखित सामग्री के साथ-साथ गैर प्रशासनिक संस्थाओं एवं व्यक्तिगत दस्तावेजों का समावेश शामिल है।

राजस्थान में पुरालेख सामग्री तीन भाषाओं में लिपिबद्ध मिलती हैं :- 1. फारसी 2. राजस्थानी एवं हिन्दी 3. अंग्रेजी

फारसी भाषा में लिपिबद्ध पुरालेख स्रोत फरमान, मंसूर, रुक्का, निशान, हस्बुल, वकील रिपोर्ट, इंश, रुक्केयात आदि के रूप में मिलते हैं ।

(i) फरमान :- बादशाहों द्वारा जारी होने वाले शाही आदेश।

(ii) हस्बुल हकम :- शाही परिवार के किसी सदस्य या सरदार द्वारा प्रेषित किए जाने वाले आदेश जिसमें किसी व्यक्ति को कोई स्वीकृति दी जाती थी तथा जिसमें बादशाह की सहमति होती थी ।

(iii) परवाना :- महाराजा द्वारा अपने अधीनस्थ को जारी किए जाने वाले आदेश ।

(iv) निशान :- बादशाह के परिवार के किसी सदस्य द्वारा मनसबदार को अपनी मोहर के साथ जारी किए जाने वाले आदेश ।

(v) खरीता :- एक राजा द्वारा दूसरे राजा के साथ किया जाने वाला पत्र व्यवहार ।

(vi) रुक्का :- राज्य के अधिकारियों के मध्य पत्र व्यवहार। यह निजी पत्र व्यवहार था ।

(vii) मंसूर :- एक प्रकार का शाही आदेश जो बादशाह की मौजूदगी में शाहजादे द्वारा जारी किया जाता था ।

(viii) सनद :- एक प्रकार की स्वीकृति जिसके द्वारा सम्राट अपने अधीनस्थ राजा को जागीर प्रदान करता था।

(ix) वाक्या:- इसमें बादशाह या राजा की व्यक्तिगत एवं राजकार्य संबंधी गतिविधियाँ तथा राज परिवार के सदस्यों की सामाजिक रस्म, व्यवहार, शिष्टाचार आदि का वर्णन होता था ।

(x) वकील रिपोर्ट :- मुग़ल राज्यों में राजपूत राज्यों का एक प्रतिनिधि रहता था जिसे वकील कहा जाता था। इन वकील के माध्यम से शासकों को मुग़ल दरबार की गतिविधियों की रिपोर्ट प्राप्त होती थी, जो **वकील रिपोर्ट** के नाम से जानी जाती थी ।

(xi) अर्जदाश्त :- प्रजा द्वारा बादशाहों या शाहजादों को लिखा जाने वाला पत्र ।

(xii) दोवर्की:- दो परतों वाले दस्तावेज दोवी के नाम से जाने जाते थे। इन परतों में मुख्य रूप से दैनिक प्रशासन, युद्ध संबंधित खर्च, घायलों के उपचार आदि पर प्रकाश डाला जाता था।

बहियाँ :

राजपूत राजघरानों में मध्यकाल से शुरू हुई बहियाँ लिखने की परम्परा विवाह संबंधी, सरकारी आदेशों, राजाओं के शासनकाल एवं राजाओं द्वारा जारी आदेशों की जानकारी देती है। बहियों के आधार पर मध्यकालीन राजस्थान के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के विषय के संबंध में जानकारी मिलती है।

- **हकीकत बही** में सन् 1857 के भारतीय विद्रोह के संबंधी अंश विद्यमान है।
- **'ओहया बही'** से ज्ञात होता है कि जोधपुर शासकों द्वारा कौन-कौनसे आदेश जारी किए गए थे एवं उस समय कौन-कौनसे अधिकारी व कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त थे।
- फुटकर बही से विभिन्न घटनाओं की जानकारी मिलती है।
- कमठाना बहियों से राजप्रासाद बनाने में खर्च तथा दैनिक मजदूरी आदि के बारे में वर्णन मिलता है ।
- जयपुर के **'तोजी रिकॉर्ड'** में दैनिक व्यय एवं वकील रिपोर्ट से मुग़ल कच्छवाहा तथा मराठा कच्छवाहा संबंधों पर प्रकाश डाला गया है।
- मेवाड़ राज्य के वार्षिक आय-व्यय का ज्ञान जिन अभिलेखों से होता है उन्हें पड़ाखा एवं पक्का खाता के नाम से जाना जाता है। इसमें लगान, शहर पट्टा, जागीर से प्राप्त राशि, प्रशासनिक तंत्र, न्यायपालिका पर होने वाले खर्च आदि का उल्लेख मिलता है।
- सबसे प्राचीन बही राणा राजसिंह (1652 - 1680 ई.) के समय की है।
- बहियों के माध्यम से त्यौहार और उन्हें मनाने की विधि, विवाह आदि अवसरों पर होने वाले खर्चे तथा विभिन्न वस्तुओं के मूल्य का लेखा-जोखा प्राप्त होता है।

मण्डन के प्रमुख ग्रंथ –

- वैद्य मण्डन – इस ग्रंथ में व्याधियों, बीमारियों का निदान बताया गया है।
- शकुन मण्डन – शकुन शास्त्र का वर्णन
- कोदेन मण्डन – इस ग्रंथ में धनुर्विद्या के बारे में जानकारी दी गई है।
- प्रासाद मण्डन – इस ग्रंथ में देवालय निर्माण की जानकारी दी गई है।
- राजवल्लभ मण्डन – 14 अध्यायों में विभक्त ग्रंथ इस ग्रंथ से आवासीय भवन एंव राजप्रासादों के निर्माण से संबंधित जानकारी दी गई है।
- रूपमण्डन – 6 अध्यायों में विभक्त है।
- यह ग्रंथ मूर्तिकला से संबंधित है।
- छठे अध्याय में जैन धर्म की मूर्तियों से संबंधित वर्णन है।
- रूपावतर मण्डन (मूर्ति प्रकरण) – मूर्तिकला से संबंधित यह ग्रंथ 8 अध्यायों में विभक्त है।
- वास्तुमण्डन तथा वास्तुकार में वास्तुकला का वर्णन है।
- मण्डन के भाई का नाम नाथा तथा इनके ग्रंथ का नाम वास्तु मंजरी
- मण्डन के पुत्र का नाम गोविंद
- गोविंद के प्रमुख ग्रंथ – कलानिधि, उद्धार धारिणी, द्वारा दीपिका
- राणा कुंभा की हत्या 1468 ई. में मामादेव कुण्ड के पास कुंभलगढ़ (राजसमंद) में पुत्र ऊदा द्वारा की गई।
- इस लिए इतिहास में उदा को मेवाड़ का पितृहन्ता कहते हैं

Note – कर्नल जेम्स टॉड ने कहा – कुंभा में लाखा जैसी प्रेम कला एवं हम्मीर जैसी शक्ति थी। जिसने मेवाड़ के झंडे को घग्घर नदी के तट पर फहराया।

रायमल (1473-1509)

- राणा रायमल ने लगभग 36 वर्षों (1473-1509 ई.) तक शासन किया। किन्तु उसमें अपने पिता की भांति शूरवीरता एवं कूटनीतिज्ञता का अभाव था। परिणामस्वरूप मेवाड़ के कुछ अधीनस्थ क्षेत्र उसके हाथ से निकल गए। आबू, तारागढ़ और सांभर तो उदा के शासनकाल में ही मेवाड़ से अलग हो चुके थे।
- रायमल ने इन्हें पुनः अधिकृत करने का कोई प्रयास नहीं किया। अब मालवा के सुल्तान ने रणथम्भौर, टोडा और बूँदी को अपने अधिकार में कर लिया। टोडा के शासक राव सुरतान ने मेवाड़ में आश्रय इस आशा से लिया था कि शायद मेवाड़ से उसे सहायता मिल जाए। राव सुरतान के साथ उसकी पुत्री तारा भी थी, जो अद्वितीय सुंदर और वीरांगना थी। राव सुरतान ने प्रतिज्ञा कर रखी थी, कि वह अपनी पुत्री का विवाह उस शूरवीर से करेगा जो टोडा जीतकर उसे वापस दिलाएगा।
- राणा रायमल के द्वितीय पुत्र जयमल ने तारा की सुंदरता पर आसक्त होकर उससे विवाह करने की जिद की तथा राव सुरतान के साथ अत्यंत ही अशिष्ट व्यवहार किया। क्रुद्ध राव सुरतान ने जयमल को मौत के घाट उतार दिया और राणा को सूचित कर दिया। जयमल की मृत्यु के बाद रायमल के ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने तारा से विवाह करने का निश्चय कर टोडा पर आक्रमण कर जीत लिया।
- कुंवर पृथ्वीराज ने टोडा का राज्य राव सुरतान को सौंप दिया तथा वचनबद्ध राव सुरतान ने तारा का विवाह पृथ्वीराज से कर दिया। राणा रायमल का ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज था और जयमल दूसरा साँगा तीसरा पुत्र था। जयमल राव सुरतान के हाथों मारा गया तथा सिरोही लौटते समय रास्ते में अपने बहनोई द्वारा दिए गए विषाक्त लड्डू खाने से पृथ्वीराज की मृत्यु हो गई । इसी प्रकार रायमल के दो ज्येष्ठ पुत्रों का स्वर्गवास हो गया।

महाराणा साँगा (1509-1528) या राणा साँगा (1509-1528 ईस्वी)

- प्रारंभिक जीवन : राणा साँगा (महाराणा संग्राम सिंह) (राज 1509-1528) उदयपुर में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे तथा राणा रायमल के सबसे छोटे पुत्र थे।
- मेवाड़ योद्धाओं की भूमि है, यहाँ कई शूरवीरों ने जन्म लिया और अपने कर्तव्य का प्रवाह किया । उन्हीं उत्कृष्ट मणियों में से एक थे राणा साँगा, साँगा का पूरा नाम महाराणा संग्राम सिंह था । वैसे तो मेवाड़ के हर राणा की तरह इनका पूरा जीवन भी युद्ध के इर्द-गिर्द ही बीता लेकिन इनकी कहानी थोड़ी अलग है । एक हाथ, एक आँख, और एक पैर के पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने के बावजूद इन्होंने ज़िन्दगी से हार नहीं मानी और कई युद्ध लड़े।
- राणा साँगा अदम्य साहसी थे। इन्होंने सुल्तान मोहम्मद शासक माण्डु को युद्ध में हराने व बन्दी बनाने के बाद उन्हें उनका राज्य पुनः उदारता के साथ सौंप दिया, यह उनकी बहादुरी को दर्शाता है। बचपन से लगाकर मृत्यु तक इनका जीवन युद्धों में बीता। इतिहास में वर्णित है, कि महाराणा संग्राम सिंह की तलवार का वजन 20 किलो था ।
- राणा रायमल के तीनों पुत्रों (कुंवर पृथ्वीराज, जयमल तथा राणा साँगा) में मेवाड़ के सिंहासन के लिए संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। एक भविष्यकर्ता के अनुसार साँगा को मेवाड़ का शासक बताया जाता है ऐसी स्थिति में कुंवर पृथ्वीराज व जयमल अपने भाई राणा साँगा को मौत के घाट उतारना चाहते थे, परन्तु साँगा किसी प्रकार यहाँ से बचकर अजमेर पलायन कर जाते हैं तब सन् 1509 में अजमेर के कर्मचन्द पंवार की सहायता से राणा साँगा को मेवाड़ राज्य प्राप्त हुआ। महाराणा साँगा ने सभी राजपूत राज्यों को संगठित किया और सभी राजपूत राज्य को एक छत्र के नीचे लाएं। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधि की और इस प्रकार महाराणा साँगा ने अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब सतलज नदी से लेकर दक्षिण में मालवा को जीतकर नर्मदा नदी तक कर दिया। पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बयाना भरतपुर ग्वालियर तक अपना राज्य विस्तार किया इस प्रकार मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता के इतने बड़े क्षेत्रफल पर हिंदू साम्राज्य कायम हुआ इतने बड़े क्षेत्र वाला

- आबू पर मूलराज प्रथम के आक्रमण तथा धवल राठौड़ के द्वारा धरणी वराह को शरण देने की बात का उल्लेख हस्तिकुंडी अभिलेख में किया गया है।

हस्तिकुंडी अभिलेख-

- हस्तिकुंडी अभिलेख 997 ई. का है।
- हस्तिकुंडी अभिलेख राजस्थान के पाली जिले से प्राप्त हुआ था।
- हस्तिकुंडी अभिलेख धवल राठौड़ का है।

धन्धुक -

- धन्धुक आबू का राजा है।
- राजा धन्धुक के समय गुजरात के चालुक्य राजा भीम प्रथम ने आबू पर आक्रमण किया था।
- इस आक्रमण में गुजरात के राजा भीम सिंह के द्वारा आबू पर अधिकार कर लिया जाता है।
- आबू पर अधिकार करने के बाद भीम प्रथम ने विमलशाह को आबू का प्रशासक बना दिया था।
- भीम प्रथम के आक्रमण के समय मालवा के भोज परमार ने धन्धुक को चित्तौड़ में शरण दी थी।
- विमलशाह ने धन्धुक तथा भीम प्रथम के बीच समझौता करवा दिया था।
- धन्धुक की पुत्री लाहिनी देवी (लाहिणी देवी) ने बसन्तगढ़ में सूर्य मंदिर तथा सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया था।
- पुनर्निर्माण को ही जीर्णोद्धार कहा जाता है।
- सरस्वती बावड़ी को लाहिनी बावड़ी (लाहिणी बावड़ी) भी कहा जाता क्योंकि सरस्वती बावड़ी का पुनर्निर्माण लाहिनी देवी के द्वारा करवाया गया था।
- बसन्तगढ़ क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।

देलवाड़ा का ऋषभदेव (आदिनाथ) मंदिर-

- विमलशाह ने देलवाड़ा में भगवान ऋषभदेव मंदिर का निर्माण करवाया था।
- देलवाड़ा क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- देलवाड़ा के ऋषभदेव मंदिर को आदिनाथ जैन मंदिर भी कहा जाता है।
- देलवाड़ा के ऋषभदेव मंदिर को विमलवसहि मंदिर भी कहा जाता है क्योंकि देलवाड़ा का ऋषभदेव मंदिर विमलशाह के द्वारा बनवाया गया था।
- कर्नल जेम्स टाड के अनुसार देलवाड़ा का ऋषभदेव मंदिर ताजमहल के बाद भारत की दुसरी सबसे सुन्दर इमारत है।

धारावर्ष -

- धारावर्ष एक तीर से तीन भैंसों को बींध देता था।
- धारावर्ष के द्वारा एक तीर से तीन भैंसों को बींध देने की जानकारी पाटनारायण अभिलेख तथा अचलगढ़ किले से मिलती है।
- पाटनारायण अभिलेख 1287 ई. का है।
- पाटनारायण अभिलेख सिरोही से प्राप्त हुआ है।
- अचलगढ़ के किले में धारावर्ष की मूर्ति लगी हुई है जिसमें धारावर्ष के द्वारा एक तीर से तीन भैंसों को बींधते हुए दिखाया गया है।
- अचलगढ़ का किला सिरोही में स्थित है।

प्रह्लादन देव -

- प्रह्लादन देव धारावर्ष का छोटा भाई था।
- प्रह्लादन देव ने गुजरात में प्रह्लादन पुर नामक नगर की स्थापना की थी।
- प्रह्लादन देव ने पार्थपराक्रमव्यायोग नामक नाटक लिखा था।
- पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के समय प्रह्लादन देव ने आबू की रक्षा की थी।

कायन्द्रा का युद्ध (1178 ई.)-

- कायन्द्रा का युद्ध 1178 ई. का है।
- कायन्द्रा क्षेत्र राजस्थान के सिरोही जिले में स्थित है।
- कायन्द्रा का युद्ध गजनी के शासक मोहम्मद गौरी तथा गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय चालुक्य के मध्य हुआ था।
- गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय की आयु कम होने के कारण गुजरात के राजा मूलराज की माँ नायिका देवी गुजरात का शासन चलाती थी।
- गुजरात के राजा मूलराज द्वितीय की संरक्षिका उसकी माँ नायिका देवी ही थी।
- कायन्द्रा के युद्ध में नायिका देवी (मूलराज द्वितीय) का साथ देने के लिए नाडौल से कायन्द्रा के युद्ध में नायिका देवी ने मोहम्मद गौरी को हरा दिया था।

सोम सिंह -

- वस्तुपाल तथा तेजपाल ने देलवाड़ा (सिरोही) में नेमिनाथ जैन मंदिर का निर्माण करवाया था।
- देलवाड़ा के नेमिनाथ मंदिर का लूणवसहि मंदिर भी कहा जाता है।
- देलवाड़ा के नेमिनाथ मंदिर को देवरानी जेठानी का मंदिर भी कहा जाता है।
- वस्तुपाल तथा तेजपाल दोनों आबू के राजा सोम सिंह के सेनापति थे।

प्रताप सिंह -

- प्रताप सिंह ने मेवाड़ के जैत्रसिंह से चन्द्रावती को छीन लिया था।
- प्रताप सिंह के मंत्री देल्हण ने पाटनारायण मंदिर का पुनर्निर्माण (जीर्णोद्धार) करवाया था।

विक्रम सिंह (Vikram Singh)-

- विक्रम सिंह के शासन काल में आबू के परमार राजा रावल तथा महारावल की उपाधियां धारण करने लगे थे।
- कालांतर में जालौर के सोनगरा चौहानों ने आबू के परमार राज्य के पश्चिमी भाग पर अधिकार कर लिया था।
- लूम्बा देवड़ा ने परमारों से आबू तथा चन्द्रावती छीनकर सिरोही में चौहान राज्य की स्थापना की थी।

हो गया। स्वयं महाराणा भी इतना असहाय हो गया कि अपने ही सामंतों को नियंत्रण में रखने के लिए उसे महादजी से सहायता की याचना करनी पड़ी । मेवाड़ में व्यवस्था और अनुशासन तो मानों कोसों दूर चले गये थे। सर्वत्र भयंकर अराजकता का शासन स्थापित हो गया। अर्द्ध शताब्दी की इस अराजकता के बाद राजस्थान में अंग्रेजी की सर्वोपरि सत्ता स्थापित होने के बाद इसका अंत हो सका।

मूल्यांकन

बूँदी के आंतरिक झगड़े के कारण राजस्थान में मराठों का प्रथम प्रवेश हुआ और फिर प्रतिवर्ष मराठों के निरंतर आक्रमण होने लगे। पेशवा की तरह उसके मराठा सरदार भी अब ऋण भार से दबे जा रहे थे और धन प्राप्त करने के लिये उन्हें राजस्थान के राज्य ही दिखायी देते थे। अतः वे किसी न किसी बहाने इन राज्यों पर आक्रमण कर धन प्राप्त करने को उत्सुक रहते थे। राजस्थानी शासक भी मराठों को येन-केन अपने राज्य से विदा करने हेतु उन्हें धन देने का वायदा कर लेते थे, लेकिन जब वायदे के अनुसार वे मराठों को धन नहीं देते तब वसूल करने के लिये मराठा उन पर सैनिक दबाव डालते। राजपूत शासक भी टालमटूल की नीति अपनाते रहे और अधिक दबाव पड़ने पर थोड़ा बहुत देकर उन्हें समझा बुझा दिया जाता। दिनों दिन राजपूत शासकों की बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति के कारण इस नीति का अवलंबन करने के अलावा इन राज्यों के पास कोई अन्य विकल्प नहीं था। धीरे-धीरे समस्त राजस्थान पर मराठों का एकाधिपत्य स्थापित हो गया। रागरंग में डूबे, मदिरा की मस्ती में चूर, अफीम की पिनक में पड़े राजस्थान के सभी शासक कूप मंडूक बने हुए थे। विदेश की बात तो दूर रही, देश और प्रान्त की बदलती हुई राजनीति से भी वे सर्वथा अनभिज्ञ थे। यूरोपीय सेनानायकों द्वारा प्रशिक्षित सेनाओं की सफलता देखकर भी राजस्थानी शासकों ने अपनी सेना में समयानुकूल परिवर्तन करना आवश्यक नहीं समझा। अतः आक्रमणकारी एवं लुटेरे मराठों का सामना करने का किसी में साहस नहीं रहा। राजस्थान में मराठों की निरंतर विजयों से राजपूतों के आत्म गौरव व प्रतिष्ठा को भारी ठेस पहुँची, जिससे राजपूतों के मन में मराठों के प्रति तीव्र कटुता भर गयी। मराठों को किसी तरह नीचा दिखाने हेतु उन्होंने उचित व अनुचित कार्य किये, किन्तु उसके भावी दुष्परिणामों की उपेक्षा की। फलस्वरूप राजस्थान का शोचनीय पतन हुआ।

अध्याय - 4

आधुनिक राजस्थान

- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के साथ ही राजपूत राज्यों पर मुग़ल केन्द्रीय सत्ता का नियंत्रण ढीला पड़ गया।
- सभी राजपूत राज्य अपने राज्य का विस्तार करने तथा पड़ौसी राज्य पर राजनैतिक वर्चस्व स्थापित कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए।
- इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप राजपूत राज्यों में पारस्परिक संघर्ष बढ़ गये।
- शासकों ने पारस्परिक संघर्षों में सहायता प्राप्त करने के लिए बाहरी ताकतों (मराठा, अंग्रेज, होल्कर आदि) का सहारा लेने लगे।
- जब राज्यों में उत्तराधिकार संघर्ष में मराठों का हस्तक्षेप हुआ तो राजपूताना के शासकों ने मराठा के विरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी से सहायता माँगी लेकिन अंग्रेजों ने इन प्रस्तावों पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उस समय अंग्रेजों की नीति राजपूताना के लिए मराठों से युद्ध करने की नहीं थी।
- भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का आगमन 1600 ई. में हुआ था।
- 1757 ई. में प्लासी युद्ध के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहली बार भारत में बंगाल में) राजनीतिक सत्ता प्राप्त की।
- रॉबर्ट क्लाइव सन् 1757 में बंगाल का प्रथम गवर्नर बना।
- 1764 ई. के बक्सर युद्ध के पश्चात् हुई इलाहाबाद संधि ने कम्पनी को भारत में पूर्णतः राजनीतिक शक्ति प्रदान की।
- वारेन हेस्टिंग्स 1772 ई. में बंगाल के प्रथम गवर्नर जनरल बने।
- वारेन हेस्टिंग्स ने सुरक्षा घेरे की नीति (पॉलिसी ऑफ रिंग फेंस) को अपनाया जिसके अनुसार कम्पनी द्वारा अपने अधिकृत प्रदेशों को शत्रुओं से सुरक्षा के लिए पड़ौसी राज्यों के साथ मैत्री संधि कर उन्हें बफर राज्यों के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस ने भारतीय शासकों के मामलों में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई ।
- 1798 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने देशी राज्यों के साथ सहायक संधि की नीति अपनाई।
- इस नीति के तहत देशी राज्यों की आंतरिक सुरक्षा व विदेशी नीति का उत्तरदायित्व अंग्रेजों पर था जिसका खर्च संबंधित राज्य को उठाना पड़ता था।
- कम्पनी इस हेतु उस राज्य में एक अंग्रेज रेजीडेन्ट की नियुक्ति करती थी एवं सुरक्षा हेतु उस देशी राज्य के खर्च पर अपनी सेना रखती थी।
- भारत में प्रथम सहायक संधि 1798 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ की गई।

राजस्थान की रियासतें और ब्रिटिश संधियां				
क्र. सं.	**संधिकर्त्ता राज्य**	**संधि के समय शासक**	**संधि की तिथि**	**अंग्रेज कम्पनी को दी जाने वाली खिराज राशि**
1.	करौली	हरबक्षपालसिंह	9 नवम्बर, 1817	खिराज से मुक्त
2.	टोंक	अमीर खाँ	15 नवम्बर, 1817	-
3.	कोटा	उम्मेद सिंह	26 दिसम्बर, 1817	2,44,700 रु.
4.	जोधपुर	मानसिंह	6 जनवरी, 1818	1,08,000 रु.
5.	उदयपुर	भीमसिंह	22 जनवरी, 1818	राज्य की आय का 1/4 भाग
6.	बूँदी	विसनसिंह	10 फरवरी, 1818	80,000 रु.
7.	बीकानेर	सूरतसिंह	21 मार्च, 1818	मराठों को खिराज नहीं देता था, इसलिए खिराज से मुक्त
8.	किशनगढ़	कल्याणसिंह	7 अप्रैल , 1818	खिराज से मुक्त
9.	जयपुर	जगतसिंह	15 अप्रैल , 1818	संधि के प्रथम वर्ष कुछ नहीं, दूसरे वर्ष 4 लाख, चौथे वर्ष 6 लाख, पाँचवें वर्ष 7 लाख, छठें वर्ष 8 लाख फिर 8 लाख निश्चित।
10.	जैसलमेर	मूलराज	2 जनवरी, 1819	मराठों को खिराज नहीं देता था, अतः खिराज से मुक्त।
11.	प्रतापगढ़	सामन्तसिंह	5 अक्टूबर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
12.	डूंगरपुर	जसवन्त सिंह द्वितीय	1818 ई.	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
13.	बाँसवाड़ा	उम्मेदसिंह	25 दिसम्बर, 1818	धार राज्य को दिया जाने वाला खिराज अब कम्पनी को।
14.	सिरोही	शिवसिंह	11 सितम्बर, 1823	संधि के तीन वर्ष तक खिराज से मुक्त उसके बाद आय के प्रति रुपये पर छः आना।
15.	झालावाड़	मदनसिंह	10 अप्रैल, 1838	80,000 रु. वार्षिक।

प्रश्न- राजपूताना की निम्नलिखित रियासतों ने 1817-1818 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ संधि पर हस्ताक्षर किये -

(1) कोटा (2) जोधपुर

(3) करौली (4) उदयपुर

निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम, कालाक्रमानुसार सही है ?

(a) (1), (2), (3), (4)

(b) (3), (4), (1), (2)

(c) (4), (1), (2), (3)

(d) (3), (1), (2), (4) (d)

- अगस्त 1803 ई. में आंग्ल-मराठा के द्वितीय युद्ध में मराठों की पराजय के पश्चात् मराठा पेशवा दौलतराव द्वारा 30 दिसम्बर, 1803 को अंग्रेजों के साथ सुर्जीअर्जन गाँव संधि कर जयपुर एवं जोधपुर राज्यों को अंग्रेजों को सौंप दिया।
- राजस्थान में सर्वप्रथम भरतपुर राज्य के महाराजा रणजीतसिंह के साथ 29 सितम्बर 1803 को लॉर्ड वेलेजली ने सहायक संधि की।
- आपसी अविश्वास के कारण यह संधि क्रियान्वित न हो पायी। इससे रुष्ट होकर लॉर्ड लेक के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 5 बार भयंकर आक्रमण किये लेकिन अंग्रेज भरतपुर को जीतने में असफल रहे एवं अप्रैल 1805 में नई संधि हुई जिसमें भरतपुर की पूर्व की स्थिति रखी गई, भरतपुर राज्य की सीमा एवं क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन नहीं किया गया तथा भरतपुर को डीग (वर्तमान डीग जिला) क्षेत्र लौटा दिया गया।
- अलवर प्रथम राज्य था जिसने ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ विस्तृत रक्षात्मक एवं आक्रामक संधि की थी।
- अंग्रेजों द्वारा जयपुर के महाराजा जगतसिंह द्वितीय के साथ 12 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई।
- 1805 ई. में यह संधि भंग कर दी गई लेकिन मराठा सरदार एवं पिंडारियों के आतंक ने जयपुर-अंग्रेजों को पुनः संधि करने के लिए बाध्य कर दिया।
- 2 अप्रैल, 1818 को ईस्ट इण्डिया कम्पनी एवं जयपुर राज्य के मध्य पुनः संधि हुई।
- जोधपुर शासक भीमसिंह के समय जोधपुर राज्य के साथ 22 दिसम्बर, 1803 को संधि की गई। इस संधि की प्रमुख शर्तें एक-दूसरे को सहायता देने, परस्पर मित्रता बनाए रखने की थी ।
- खिराज नहीं देने एवं जोधपुर राज्य में किसी फ्रांसीसी को नौकरी नहीं देने अथवा देने से पूर्व कम्पनी से सलाह मशविरा करना आदि थी।
- 1813 ई. में लॉर्ड हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल बनने के बाद कम्पनी सरकार की नीति में परिवर्तन आया।
- लॉर्ड हेस्टिंग्स ने घेरे की नीति के स्थान पर अधीनस्थ पार्थक्य की नीति को क्रियान्वित किया।

1817-18 की अधीनस्थ संधि

- 1818 ई. में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने के लिए लॉर्ड हेस्टिंग्स ने दिल्ली रेजीडेन्ट चार्ल्स मेटकॉफ को कार्य सौंपा। मेटकॉफ ने राज्य के प्रतिनिधियों से बातचीत कर संधि पत्र तैयार किये।
- सन् 1811 में चार्ल्स मेटकॉफ ने राजस्थान के राजपूत शासकों का एक परिसंघ बनाने का सुझाव दिया जो ब्रिटिश संरक्षण में कार्य करे।
- राजस्थान में अधीनस्थ पार्थक्य की नीति (1818 की संधि) को स्वीकार करने वाली पहली रियासत - करौली।
- (9 नवम्बर 1817) अधीनस्थ पार्थक्य संधि स्वीकार करने के समय करौली का शासक- हरबक्षपाल सिंह थे ।
- अधीनस्थ पार्थक्य की संधि को स्वीकार करने वाला अंतिम राज्य - सिरोही (11 सितम्बर 1823) यहाँ के शासक महाराजा शिव सिंह थे।

प्रश्न- निम्नलिखित में से किसने राजपूताना की देशी रियासतों के साथ 1817-18 की अधीनस्थ संधि की बातचीत की थी ?

(1) डेविड ऑक्टरलोनी

(2) चार्ल्स मैटकॉफ

(3) आर्थर वेलेजली

(4) जॉन जॉर्ज Ans. 2

अधीनस्थ पार्थक्य संधि (1818) की शर्तें

1. अंग्रेजी कम्पनी एवं संधिकर्त्ता राज्य के साथ सदैव मित्रता के सम्बन्ध बने रहेंगे। एक के मित्र तथा शत्रु दोनों के मित्र और शत्रु समझे जाएँगे।
2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ोसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

कोटा राज्य के साथ संधि

26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरल के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई । इस संधि में 11 धाराएँ थीं।

नवीन राजस्थान 1921

यह समाचार पत्र अजमेर से प्रकाशित होता था इसकी शुरुआत विजयसिंह पथिक ने की थी यहीं समाचार पत्र आगे चलकर तरुण राजस्थान समाचार पत्र के नाम से जाना गया ।

बिजौलिया किसान आंदोलन के समय पथिक ने नवीन राजस्थान और राजस्थान केसरी समाचार पत्रों का प्रयोग आंदोलन प्रचार के लिए किया था।

नवज्योति 1936

यह अजमेर से प्रकाशित होने वाला साप्ताहिक पत्र था, इसकी स्थापना रामनारायण चौधरी ने की थी इसकी बागड़ोर दुर्गाप्रसाद चौधरी ने संभाली थी।

राजस्थान समाचार 1889

यह अजमेर से प्रकाशित होता था, इसके संस्थापक मुंशी समर्थदान थे यह प्रथम हिन्दी दैनिक समाचार पत्र था।

राजपूताना गजट :-1835

समाचार पत्र राजपूताना गजट यह अजमेर से प्रकाशित होता था । इसके संस्थापक मौलवी मुराद अली थे।

अखण्ड भारत :- 1936

यह मुम्बई से प्रकाशित होता था । इसके संस्थापक जयनारायण व्यास थे ।

लोकवाणी:- 1943

यह जयपुर से प्रकाशित होता थाइसके संस्थापक पंडित देवीशंकर थे, यह पत्र जमनालाल बजाज की स्मृति में प्रकाशित किया गया था ।

सज्जन कीर्ति सुधाकर :- 1876

यह मेवाड़ से प्रकाशित होता था । इसका प्रकाशन महाराणा सज्जनसिंह ने करवाया था ।

राजस्थान टाइम्स :- लक्ष्मणदास द्वारा अजमेर से 'राजस्थान टाइम्स' का प्रकाशन शुरू किया।

प्रताप :- 1910

यह कानपुर से प्रकाशित होता था। इसके संस्थापक पथिकजी और गणेश शंकर विद्यार्थी थे। इसमें बिजौलिया किसान आंदोलन की घटना को प्रकाशित किया गया था ।

देश हितैषी :- 1882

यह समाचार पत्र अजमेर से प्रकाशित होता था। इसके प्रकाशक मुन्नालाल शर्मा थे ।

आगी बाण (1932):- यह ब्यावर से प्रकाशित होता था। इसके संस्थापक जयनारायण व्यास थे।

राज्य की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएं

संस्था का नाम	स्थापना	स्थान	संस्थापक
देश हितैषणी सभा	1877	उदयपुर	महाराणा सज्जन सिंह (अध्यक्ष)
परोपकारी सभा	1883	उदयपुर	महाराणा सज्जन सिंह (अध्यक्ष)
राजपुत्र हितकारिणी सभा	1888	अजमेर	ए. जी. जी. कर्नल वाल्टर
सर्वहितकारिणी सभा	1907	चूरू	स्वामी गोपालदास
मित्र-मण्डल		बिजौलिया	साधु सीताराम दास
वीर भारत सभा	1910		केसरी सिंह बारहठ
विद्या प्रचारिणी सभा		बिजौलिया	साधु सीताराम दास
प्रताप सभा	1915	उदयपुर	बलवन्त सिंह मेहता
हिन्दी साहित्य समिति	1912	भरतपुर	जगन्नाथ दास
प्रजा प्रतिनिधि सभा	1918	कोटा	पं. नयनूराम शर्मा
मरूधर मित्र हितकारिणी सभा	1918	जोधपुर	चांदमल सुराणा
राजपुताना मध्य भारत सभा	1918	दिल्ली	अध्यक्ष-जमनालाल बजाज
राजस्थान सेवा संघ	1919	वर्धा	विजयसिंह पथिक
मारवाड़ सेवा संघ	1920	जोधपुर	जयनारायण व्यास, अध्यक्ष दुर्गाशंकर
अमर सेवा समिति	1922	चिड़ावा	मा. प्यारेलाल गुप्ता
मारवाड़ हितकारिणी सभा	1923	जोधपुर	जयनारायण व्यास
चरखा संघ	1927	जयपुर	जमनालाल बजाज

- **राजस्थान के प्रमुख नृत्य**

➢ **शास्त्रीय नृत्य**

- राजस्थान का एकमात्र शास्त्रीय नृत्य' कथक' हैं ।
- कथक नृत्य के प्रवर्तक भानुजी को माना जाता है।
- जयपुर घराना कथक नृत्य का आदिम घराना है।
- वर्तमान में कथक नृत्य उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य हैं कथक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बिरजू महाराज है।
- अन्य कलाकार प्रेरणा श्रीमाली, उदयशंकर ।

➢ **लोकनृत्य**

- लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त करना एवं आनंद व उमंग से भरकर सामूहिक रूप से किए जाने वाले नृत्य ही लोकनृत्य कहलाते है।

➢ राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है -

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **जातीय नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

❖ **राजस्थान के क्षेत्रीय लोकनृत्य**

➢ **घूमर**

- 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति'घुम्म' से हुई है, जिसका अर्थ होता है,'लहंगे का घेर' ।
- घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं ।
- घूमर के साथ आठ मात्रा के कहरवे की विशेष चाल होती है, जिसे सवाई कहते हैं ।
- घूमर नृत्य की उत्पति मध्य एशिया के भरंग नृत्य से मानी जाती हैं ।
- यह राजस्थान का राजकीय नृत्य है ।
- यह नृत्य मारवाड़ व मेवाड़ में राजघराने की महिलाओं द्वारा गणगौर पर किया जाता है ।
- राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका'घुमर' नृत्य राजस्थान के'लोकनृत्यों की आत्मा' कहलाता है।
- इसे सिरमौर नृत्य व नृत्यों की आत्मा सामंतशाही नृत्य, रजवाड़ी नृत्य, महिलाओं का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य कहते हैं।
- यह गरबा नृत्य की तरह किया जाता है ।
- घूमर- साधारण स्त्रियों द्वारा किया जाता है।
- झूमरिया- यह बालिकाओं द्वारा किया जाता है।

➢ **झूमर नृत्य**

- हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से किया जाता है।

➢ **घुमरा नृत्य**

- इसे भील जनजाति की महिला करती है।
- यह गरबा जैसा होता है।
- यह मांगलिक अवसर पर किया जाता है।
- यह अर्द्ध वृताकार घेरे में महिलायें करती है।
- इस नृत्य में 2 दल होते हैं जिसमें एक दल गाता है तथा दूसरा नाचता है।

➢ **घूमर-घूमरा नृत्य**

- घूमर - घूमरा नृत्य राजस्थान का एकमात्र शोक सूचक नृत्य है। जो केवल वागड़ क्षेत्र के कुछ ब्राह्मण समुदाय में किया जाता है ।

➢ **ढोल नृत्य**

- राजस्थान के जालौर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों के द्वारा सामूहिक नृत्य करते हुए विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं।
- इस नृत्य को प्रकाश में लाने का श्रेय जयनारायण व्यास को जाता है।
- यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में कई ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

➢ **घुड़ला नृत्य**

- घुड़ला नृत्य विशेष रूप से जोधपुर जिले में किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य युवतियों के द्वारा किया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य में स्त्रियाँ सुंदर श्रृंगार करके गोलाकार पथ पर नृत्य करती हैं ।
- घुड़ला नृत्य करते समय महिलाओं के सिर पर छिद्रित मटके रखे होते हैं । जिनमें जलता हुआ दीपक रखा जाता हैं । इस मटके को ही घुड़ला कहते हैं ।
- शीतला अष्टमी (चैत्र कृष्णा -8) पर घुडले का त्यौहार मनाया जाता है ।
- घुड़ला नृत्य को सर्वप्रथम मारवाड़ में घुड़ले खाँ की बेटी गिंदोली ने गणगौर उत्सव के समय शुरू किया था ।

- यह नृत्य दिन में नहीं अपितु रात्रि में किया जाता है ।
- इसमें चाल मंद व मादक होती है व घुड़ले को नाजुकता से संभाला जाता है, जो दर्शनीय है ।
- **घुड़ला नृत्य से एक कथा जुड़ी हुई है-** एक बार मारवाड़ के पीपाड़ा नामक स्थान पर स्त्रियाँ तालाब पर गौरी पूजन कर रही थी तभी अजमेर का सूबेदार मल्लू खाँ 140 कन्याओं का हरण करके ले जाता है । जोधपुर नरेश सातल देव ने इनका पीछा किया । इनका भयंकर युद्ध हुआ, जिसमें मल्लू खाँ के सेनापति घुडले का सिर छिद्रित कर सातल देव द्वारा लाया गया तब से यह नृत्य किया जाता है ।

➢ **डांडिया नृत्य**

- यह मारवाड़ का प्रतिनिधि नृत्य है, जिसमें 10 – 15 पुरुष विभिन्न प्रकार की वेशभूषा में स्वांग भरकर गोले में डंडियों को आपस में टकराते हुए नृत्य करते हैं।
- यह मूलत : गुजरात का है।
- राजस्थान में यह मारवाड़ का प्रसिद्ध है।
- यह होली के बाद खेलते हैं।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य है इसमें शहनाई व नगाड़ा मुख्य वाद्य होता है।
- इस नृत्य में बड़ली के भैरुजी का गुणगान किया जाता है।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।
- डांडिया नृत्य में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा का समावेश रहता है जैसे - राजा, रानी, साधू, शिवजी, राम, सीता, कृष्ण, बजिया, सिंधिन आदि ।
- राजा का वेश प्राचीन मारवाड़ नरेशों के समान होता है।

➢ **झाँझी नृत्य**

- झाँझी नृत्य मारवाड़ क्षेत्र में महिलाओं के द्वारा किया जाता है।
- झाँझी नृत्य के अन्तर्गत छोटे मटकों मे छिद्र करके महिलाएं समूह में उनको धारण करके यह नृत्य करती हैं।

➢ **लुम्बर नृत्य**

- यह नृत्य स्त्रियों द्वारा होली पर किया जाता है ।
- यह नृत्य जालौर का प्रसिद्ध है ।
- इस नृत्य में ढोल, चंग वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।

➢ **गैर नृत्य**

- गैर नृत्य होली के दूसरे दिन से प्रारम्भ होकर पंद्रह दिन तक चलता है।
- यह मुख्यतः फाल्गुन मास में भील पुरुषों के द्वारा किया गोल घेरे की आकृति में होने के कारण इस नृत्य का नाम घेर पड़ा। जो आगे चलकर गैर कहलाया ।
- गैर नृत्य करने वाले नृत्यकार गैरिये कहलाते हैं ।
- मेवाड़ व बाड़मेर क्षेत्र में गैर नृत्य किया जाता है ।
- यह नृत्य होली के अवसर पर किया जाता है ।
- गैर नृत्य के प्रमुख वाद्य यन्त्र ढ़ोल - बाकिया - थाली है ।
- प्रत्युत्तर में गाये जाने वाले श्रृंगार रस एवं भक्ति रस के गीत फाग कहलाते है ।
- गैर नृत्य में प्रयुक्त होने वाली छड को खाडा कहा जाता है ।
- मेवाड़ में लाल / केसरिया पगड़ी पहनी जाती है ।
- बाड़मेर में सफेद आंगी (लम्बा फ्राक) कमर पर चमड़े का पट्टा व तलवार आदि लेकर नृत्य किया जाता है ।
- गैर नृत्य की प्रमुख विशेषता विचित्र वेशभूषा का प्रदर्शन है ।
- भीलवाड़ा का **घूमर गैर** अत्यन्त प्रसिद्ध है ।
- मेणार / मेनार गाँव (उदयपुर) के ऊंकारेश्वर चौराहे पर चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की द्वितीया / जमरा बीज को **तलवारों की गैर** खेली जाती है ।
- नाथद्वारा (राजसमंद) में शीतला सप्तमी (चैत्र कृष्ण सप्तमी) से एक माह तक गैर नृत्य का आयोजन होता है ।
- **आंगी - बांगी गैर नृत्य** यह चैत्र शुक्ल तृतीया के दिन किया जाता है । यह गैर लाखेटा गाँव (बाड़मेर) की प्रसिद्ध है ।

➢ **बिंदौरी नृत्य**

- राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य।
- यह पुरुष प्रधान नृत्य हैं।

➢ **जिंदाद नृत्य** - यह नृत्य शेखावाटी क्षेत्र में स्त्री - पुरुषों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में मुख्य वाद्य यंत्र ढोलकी होता है।

➢ **चंग नृत्य**

- शेखावाटी क्षेत्र में होली के समय पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य, जिसमें प्रत्येक पुरुष चंग की थाप पर गाते हुए नाचते हैं।
- इस नृत्य में धमाल गीत गाये जाते हैं।

➢ **गींदड़**

- इस नृत्य में नर्तक व नर्तकी अपने आगे वाले नर्तक व नर्तकी के कंधे पर अपना दायाँ हाथ रखते है ।
- वालर नृत्य को गरासिया घूमर भी कहते है ।
- पड़ियों कोढ़ी काल जैसे गीतों के साथ यह नृत्य सम्पन्न होता है । यह नृत्य विवाह के अलावा होली व गणगौर पर भी किया जाता है ।

➢ **कूद-** गरासिया स्त्री-पुरुषों द्वारा तालियों की ध्वनि पर बिना किसी वाद्य के किया जाता है।

➢ **जवारा**

- होली दहन से पूर्व स्त्री पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य है ।
- यह नृत्य गोल घेरा बनाकर ढ़ोल के गहरे घोष के साथ किया जाता है ।
- इस नृत्य में स्त्रियाँ हाथ में जवारों की बालियाँ लिए नृत्य करती है ।

➢ **लूर-** लूर गौत्र की गरासिया महिलाओं द्वारा एक पक्ष (वर), दूसरे पक्ष (वधू) से रिश्ते की मांग करते समय किया जाने वाला नृत्य ।

➢ **मोरिया**

- विवाह के समय गणपति स्थापना के पश्चात् गरासिया पुरुषों द्वारा संध्याकाल में किया जाने वाला सामूहिक नृत्य।

➢ **गरवा-** गुजरात के गरबा पर आधारित स्त्रियों का नृत्य जो शक्ति की उपासना में नवरात्रों के समय किया जाता है।

➢ **मांदल**

- मांगलिक अवसरों पर स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला लोकनृत्य।
- मांदल नृत्य महिलाओं द्वारा गोलाकार में किया जाने वाला नृत्य है। इसमें थाली, बांसुरी वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

➢ **रायण**

- माँगलिक अवसरों पर गरासिया पुरुषों द्वारा किया जाता है।
- रायण नृत्य पुरुषों द्वारा महिलाओं का वेश बनाकर किया जाता है, इसमें शौर्य व वीरता का प्रदर्शन किया जाता है। इसके लिए ढोल कुंडी वाद्य यंत्र प्रयुक्त होता है।

➢ **गौर**

- गणगौर के अवसर पर गरासिया स्त्री-पुरुषों द्वारा किया जाने वाला एक आनुष्ठानिक नृत्य।

❖ ***भीलों के लोकनृत्य***

➢ **गवरी (राई)**

- गवरी या राई एक नृत्य नाटक है ।
- यहराज्य की सबसे प्राचीन लोक नाटक कला है ।
- जिसे लोकनाट्यों का मेरुनाट्य भी कहा जाता है ।
- इस नृत्य नाटक के प्रमुख पात्र भगवान शिव होते है।
- शिव की अर्धांगिनी गौरी (पार्वती) के नाम के कारण ही इस नृत्य का नाम गवरी पड़ा ।
- गवरी नृत्य में शिव को पुरिया कहा जाता है ।
- नृत्याकार त्रिशूल के चारो तरफ इकट्ठे हो जाते हैं जो मांदल व थाली की ताल पर नृत्य करते हैं ।
- कुटकुड़िया इस नाट्य का सूत्रधार होता है ।
- गवरी लोकनाट्य का मुख्य आधार शिव तथा भस्मासुर की कथा है ।
- गवरी लोक नाट्य का राखी के बाद से इसका प्रदर्शन सवा माह (40) दिन चलता है ।
- इस नाट्य में शिव भस्मासुर का प्रतीक राई बुढ़िया होती है।
- गवरी नाटक दिन में प्रदर्शित किया जाता है ।
- गवरी नाटक के दौरान 12 नाटिकाएँ प्रस्तुत की जाती है जो गवरी की घाई कहलाती है । जैसे- नाहर, कालुकीर, लाखा बन्जारा, शेर-सुअर लड़ाई, भीयांवड़, बादशाह की सवारी आदि।
- गवरी नाटक में मादल वाद्ययंत्र का प्रयोग होता है ।
- दोनों पार्वतियों की प्रतिमूर्ति (मोहिनी तथा असली पार्वती) दोनों राइयाँ- कुटकुड़िया तथा पाट भोपा ये पाँचों गवरी के मुख्य पात्र होते हैं तथा अन्य पात्र खेल्ये कहलाते हैं ।
- गवरी नृत्य भील पुरुषों के द्वारा उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा में किया जाता है ।
- झामत्या पात्र लोकभाषा में कविता को बोलता है तथा खटकड़िया उसको दोहराता है ।
- ये पात्र इसके प्रमुख कलाकार हैं ।
- गवरी नृत्य नाट्य की प्रमुख विशेषता यह है कि इसे भीलों के अलावा कोई नहीं खेल सकता तथा इसमें महिलाओं की भूमिका पुरुषों के द्वारा निभाई जाती है ।
- गवरी के दिनों में स्त्री - गमन - माँस मदिरा एवं हरी सब्जी सेवन पर गवरी पात्रों के लिए पूर्णतः प्रतिबन्ध होता है ।
- गवरी नाट्य कला भीलों के जन्म - मरण और पुनर्जन्म आस्था की प्रतीक भी मानी जाती है ।
- नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की शिष्य दीक्षित भानू भारती ने इस नाट्य कला को भारतीय गायकी नामक नाम दिया ।
- गवरी नाट्य को वर्तमान में शिक्षा व विकास कार्यक्रमों से जोड़ दिया गया ।
- गवरी का प्रमुख प्रसंग देवी अमुड़ वास्या की सवारी है ।

➢ **गैर**

- होली के अवसर पर भील पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक वृत्ताकार नृत्य, जिसमें नर्तकों को'गैरिये तथा डण्डों को'खाण्डा' कहते हैं।

- भीलों में गैर का प्रचलन प्राचीनकाल से ही है।
- गैर के साथ ढोल, थाली एवं मांदल बजते हैं।

➢ **नेजा**

- नेजा नृत्य इस नृत्य को भील व मीणा जाति के लोग मिलकर करते हैं। नेजा नृत्य मेवाड़ क्षेत्र में किया जाता है ।
- यह भीलों का एक खेल नृत्य है ।
- होली के तीसरे दिन खम्भे को भूमि में रोपकर उसके उपरी सिरे पर नारियल रखकर इस नृत्य को किया जाता है ।
- खम्बे से नारियल उतारने वाले पुरुष को घेरकर खड़ी स्त्रियाँ छड़ियों व कोड़ों से पीटती हैं ।
- इस नृत्य के अवसर पर ढोल पर पगल्या लेना नामक थाप दी जाती है ।

➢ **द्विचक्री-** यह नृत्य विवाह के अवसर पर महिला - पुरुषों द्वारा दो वृत बनाकर किया जाता है ।
- इस नृत्य में बाहरी वृत पुरुष बाएँ से दाहिनी ओर तथा अन्दर के वृत में महिलाएं दाएँ से बाएँ ओर नृत्य करती हुई चलती हैं। इस नृत्य में दो चक्र पूरे होने के कारण ही इसे द्विचक्की कहते हैं।

➢ **युद्ध नृत्य**
- इस नृत्य के दौरान ऊँची हुंकारे भरते है तथा ऊँची आवाज में फाइरे - फाइरे रणघोष कहकर मांदल बजाते है ।
- यह नृत्य बेहद भयानक होता है ।
- इस नृत्य में बहुत से नर्तक घायल भी हो जाते है ।
- इसी कारण राज्य सरकार ने इस नृत्य पर प्रतिबंध लगा रखा है ।

➢ **घूमरा**
- बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, तथा उदयपुर जिलों की भील महिलाओं द्वारा मांगलिक अवसरों पर ढोल तथा थाली की थाप पर अर्द्ध वृत्त बनाकर घूम कर किया जाता हैं

➢ **गोसाई नृत्य**
- जोगणिया माता को समर्पित होली के अवसर पर भील पुरुषों के द्वारा किया जाने वाला नृत्य गोसाई नृत्य कहलाता है ।

➢ **हाथीमना नृत्य**
- भीलों द्वारा विवाह के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य हाथीमना है ।
- यह घुटनों के बल बैठकर किया जाने वाला नृत्य है ।

➢ **साद नृत्य**
- भीलों में आध्यात्मिक एवं धार्मिक समय पर किए जाने वाले को साद नृत्य कहा जाता है ।

❖ **कथौड़ी जनजाति**

➢ **मावलिया**
- नवरात्रों में कथौड़ी पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक लोकनृत्य जिसमें ढोलक, टापरा एवं बाँसुरी वाद्य बजाए जाते हैं।

➢ **होली-** होली के अवसर पर कथौड़ी महिलाओं द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य जिसमें पिरामिड भी बनाया जाता है।

❖ **सहरियों के नृत्य**

➢ **शिकारी**
- बारां जिले के सहरिया पुरुषों द्वारा शिकार का अभिनय करते हुए किया जाने वाला नृत्य हैं।

➢ **झेला नृत्य-** झेला नृत्य शाहबाद (बाराँ) की सहरिया जनजाति के स्त्री व पुरुषों (युगल जोड़ी) द्वारा सम्मिलित रूप से खेतों पर फसल की पकाई के समय किया जाता है ।

➢ **सांग नृत्य**
- सहरिया जनजाति का सांग नृत्य एक युगल नृत्य है, जिसमें स्त्री - पुरुष दोनों सम्मिलित रूप से नृत्य करते है ।

➢ **इंद्रपरी नृत्य**
- इंद्रपरी नृत्य सहरिया जनजाति का नृत्य है जिसमें रागिनी गीत गाया जाता है ।
- इस नृत्य का आयोजन विवाह के अवसर पर किया जाता है।

➢ **बिछवा नृत्य**
- बिछवा नृत्य सहरिया जनजाति की केवल स्त्रियों का नृत्य जो महिलाओं द्वारा समूह में किया जाता है।

➢ **लहँगी नृत्य-**सहरियों का अन्य महत्त्वपूर्ण नृत्य।

❖ **कंजरों के नृत्य**

➢ **चकरी नृत्य (फ्हूंदी नृत्य)**
- चकरी नृत्य कंजर युवतियों द्वारा किया जाने वाला चक्राकार नृत्य है ।
- इस नृत्य में मुख्यतः अविवाहित युवतियाँ ही भाग लेती है ।
- चकरी नृत्य में प्रमुख वाद्य ढ़प (ढोलक), मंजीरा, नगाड़ा है
- चकरी नृत्य हाड़ौती अंचल का प्रसिद्ध नृत्य है ।
- चकरी नृत्य में महिलाएं अपने प्रियतम से श्रृंगार की वस्तु लाने के लिए कहती है । चकरी नृत्य की प्रमुख कलाकार शांति, फुलवाँ तथा फिलमा बाई है ।

➢ **धाकड़ नृत्य-** धाकड़ नृत्य झालापाव व बीरा के बीच हुए युद्ध में झालापाव की विजय की खुशी में ढ़ाल, डांग, फरसा नामक हथियारों को हाथ में लेकर दो दल बनाकर किया जाता है ।
- शौर्य से परिपूर्ण इन नृत्य में युद्ध की सभी कलाएं प्रदर्शित की जाती है।

❖ **मीणाओं के नृत्य**

➢ **नेजा**

➢ **रसिया-** राज्य के पूर्वी जिलों विशेषकर दौसा, सवाई माधोपुर एवं करौली जिलों के मीणा स्त्री-पुरुषों द्वारा रसिया लोकगीतों के साथ किया जाने वाला नृत्य है।

❖ **डामोर जाति के नृत्य**

❖ **माली समाज का नृत्य**

➢ **चरवा नृत्य**

- माली समाज की स्त्रियों के द्वारा किसी स्त्री के संतान होने पर कांसे के घड़े में दीपक रखकर उसे सिर पर धारण कर चरवा नृत्य किया जाता है ।
- सामान्यतः कांसे के घड़े चरवा के कारण ही इसका यह नाम पड़ा ।

- **अभ्यास प्रश्न**

1. मुगल सम्राट शाहजहाँ के समय से ही प्रसिद्ध " नाहरनृत्य " की खेलने की परम्परा कहाँ प्रचलित है ?
(a) चौमू (b) किशनगढ़
(c) चाकसू (d) माण्डलगढ़ **(d)**

2. तेरह ताली नृत्य किस लोक देवता को समर्पित है ?
(a) गोगाजी (b) रामदेवजी
(c) पाबूजी (d) देवनारायणजी **(b)**

3. गैर नृत्य किस त्यौहार पर किया जाता है ?
(a) दीपावली (b) होली
(c) मकरसंक्रांति (d) रक्षाबंधन **(b)**

4. गरासियों द्वारा किए जाने वाले किस नृत्य में वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं होता है ?
(a) वालर (b) शंकरिया
(c) बागड़िया (d) घुड़ला **(a)**

5. राजस्थान का कौनसा नृत्य रूप 2010 में यूनेस्को (UNESCO) की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर सूची में सम्मिलित किया गया है?
(a) गींदड़ (b) कालबेलिया
(c) भवाई (d) कच्छी घोड़ी **(b)**

6. लांगुरिया नृत्य होते हैं
(a) श्रीनाथजी के मंदिर में
(b) कैलादेवी के मंदिर में
(c) खाटू श्यामजी के मंदिर में
(d) जीणमाता के मंदिर में **(b)**

7. नृत्य जो केवल पुरुषों द्वारा किया जाता है
(a) कत्थक (b) घूमर
(c) कच्छी घोड़ी (d) तेरहताली **(c)**

8. निम्न में से कौन - सा नृत्य कालबेलियों का नहीं हैं?
(a) बांगडीया (b) शंकरिया
(c) चरी (d) पणिहारी **(c)**

9. फल्कू बाई सम्बन्धित है
(a) भवाई नृत्य (b) चरी नृत्य
(c) कालबेलिया नृत्य (d) घूमर **(b)**

10. राजस्थान राज्य की' आत्मा' किस नृत्य को कहा जाता है ?
(a) घूमर (b) इंडोली
(c) तेरहताली (d) भवाई **(a)**

- **राजस्थान के लोक नाट्य**

➢ **ख्याल**

- राजस्थान के लोक नाट्य की सबसे लोकप्रिय विधा ख्याल का प्रचलन 18वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हो चुका था।
- ख्याल नाट्य का प्रमुख वाद्य यंत्र नगाड़ा और हारमोनियम होता है।
- लोकनाट्य के संवाद बोल कहलाते हैं।
- ख्यालों की विषय - वस्तु पौराणिक कथाओं से जुड़ी होती है ख्याल एक संगीत प्रधान लोक नाट्य है ।

ख्याल का नाम	**प्रचलन क्षेत्र**	**प्रवर्तक**	**प्रसिद्ध कलाकार**	**विशेषता**
कुचामनी ख्याल	कुचामन (डीडवाना-कुचामन) व निकटवर्ती क्षेत्र	श्री लच्छीराम	उगमराज	• इसमें सामाजिक व्यंग्य युक्त वाचन होता हैं। • ओपेरा इस ख्याल का स्वरुप है । • राव रीडमल, मीरामंगल, नीलगिरी, गोगा चौहान प्रमुख ख्याल है । • इस ख्याल में ढोल, शहनाई, ढोलक, सारंगी मुख्य वाद्य यंत्र काम में लिये जाते हैं ।
शेखावाटी ख्याल	सीकर, खण्डेला, चिड़ावा	श्री नानूराम	दुलियाराणा,सोहनलाल बन्सी, बनारसी	• इस ख्याल में गायन व नृत्य की प्रधानता होती है। • इसमें सारंगी, हारमोनियम, बांसुरी, ढोलक काम में ली जाती है । • हीर-रांझा, भर्तृहरि,ढोला मरवण, हरिशचन्द्र, जयदेव कंकाली आदि प्रमुख ख्याल हैं ।
तुर्रा- कलंकी ख्याल	निम्बाहेड़ा घोसूण्डा (चित्तौड़) नीमच (म.प्र)	चंदेरी के शाहअली (कलंगी) तुक्कगीर (तुर्रा)	जयदयाल सोनी, हमीर बेग, भवानीशंकर, सहेधू सिंह	• इसका उद्भव चंदेरी (मध्यप्रदेश) में हुआ । • तुकनगीर व शाहअली ने इसे प्रारम्भ किया ।

- ❖ **बयाना का किला** (भरतपुर)
- ➢ पौराणिक ग्रंथों के अनुसार बाणासुर ने ही बयाना (प्राचीन नाम शोणितपुर या भंडानक था) नामक नगर की स्थापना की थी।
- ➢ बाणासुर की पुत्री ऊषा और भगवान श्रीकृष्ण के प्रपौत्र अनिरुद्ध का प्रेमाख्यान श्रीमद् भागवत और पुराणों में वर्णित है।
- ➢ सन् 322 में गुप्तवंश के चंद्रगुप्त का शासन था। उस समय बयाना क्षेत्र में पुष्प गुप्त को अपना गवर्नर नियुक्त किया था।
- ➢ सन् 371-72 में सम्राट समुद्रगुप्त के सामंत वारिककुलीय क्षत्रप ने यज्ञ स्तंभ खड़ा किया। जिसे समुद्रगुप्त का विजय स्तम्भ कहते है जो राजस्थान का प्रथम विजय स्तम्भ है।
- ➢ इसके अलावा 960 ई. में प्रतिहार वंश ने राज किया।
- ➢ इसके अलावा सल्तनत काल, मुगल साम्राज्य और 1740 में भरतपुर के जाटों ने राज कर लिया।
- ➢ इस दुर्ग का निर्माणकर्ता विजयपाल यादव को माना जाता है जिसने1040 ई. में इसका निर्माण करवाया। महाराजा विजयपाल ने 999-1043 तक राज किया।
- ➢ इस दुर्ग को बादशाह दुर्ग, विजयगढ़ दुर्ग, विजय मंदिर किला, सुल्तान कोट, बाणासुर कहते हैं।
- ➢ खानवा युद्ध से पूर्व राणा सांगा ने 16 फरवरी, 1527 ई. को बयाना के मुगल किलेदार मेहंदी ख्वाजा को पराजित कर बयाना दुर्ग पर अधिकार किया था। लेकिन खानवा युद्ध में राणा सांगा की पराजय के बाद बयाना दुर्ग पर पुनः बाबर का अधिकार हो गया।
- ➢ यहाँ अकबर की छतरी, दाऊद खा की मीनार, लोदी की मीनार, सादुल्ला सराय, जहांगिरी दरवाजा, उषा मन्दिर, बारहदरी, उषा मस्जिद स्थित है।
- ➢ उषा मन्दिर काइस मन्दिर का निर्माण बाणासुर ने करवाया था लेकिन पुनः निर्माण फक्का वंश के राजा लक्ष्मण सेन गुर्जर की रानी चित्रलेखा व पुत्री मंगलाराज ने 936 ई. में करवाया। जिसे इल्तुतमिश ने बदलकर उषा मस्जिद बना दिया।
- ➢ 18वीं सदी जाट शासकों ने उषा मस्जिद से पुनः उषा मन्दिर बना दिया।
- ❖ **तारागढ़ (बूंदी)**

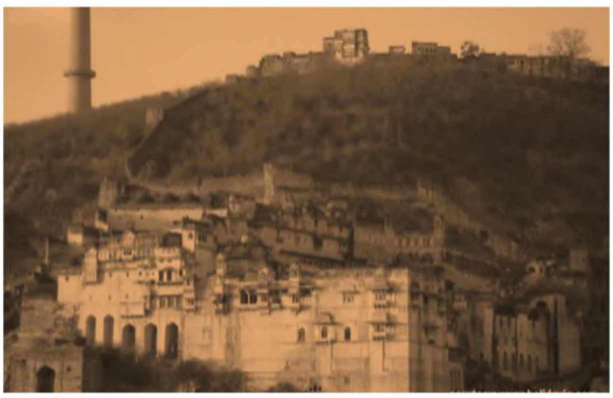

- ➢ इसका निर्माण 1354 ई. में बरसिंह हाड़ा ने करवाया।
- ➢ इसकी आकृति तारे जैसी होने के कारण इसे तारागढ़ कहते हैं।
- ➢ रुडयार्ड किपलिंग ने इसका निर्माण भूत व प्रेतों द्वारा करवाया बताया है।
- ➢ गुप्त सुरंगों के कारण इसे राजस्थान का तिलस्मा किला कहते हैं।
- ➢ मेवाड़ के राणा लाखा ने इसे जीतने की कोशिश की लेकिन जब सफलता नहीं मिली तो मिट्टी का नकली दुर्ग बनाकर उसे जीता। नकली दुर्ग को बचाते हुए कुम्भकरण हाड़ा शहीद हो गए।
- ➢ दुर्ग में गर्भगुंजन तोप स्थित है।
- ➢ यहाँ दूधा महल (सबसे प्राचीन), रंगविलास चित्रशाला, रानीजी की बावड़ी, रतन दौलत दरीखाना, 84 खम्भों की छतरी उम्मेद महल, जैतसागर महल, नवल सागर महल, जीवरखां महल,फूल महल, छत्र महल, अनिरुद्ध महल, स्थित हैं।
- ➢ कर्नल जेम्स टॉड का कथन - "रजवाड़ों के राजप्रासादों में बूँदी के महलों का सौन्दर्य सर्वश्रेष्ठ है। "

1. "ये महल मानव नहीं; प्रेतों द्वारा बनाए गए लगते हैं।" ये कथन रुडयार्ड किपलिंग द्वारा किस दुर्ग महल के बारे में कहा गया

(a) जूनागढ़, बीकानेर (b) लोहागढ़, भरतपुर
(c) तारागढ़, अजमेर **(d) तारागढ़, बून्दी**

- ❖ **शेरगढ़ (कोषवर्धन) दुर्ग**
- ➢ यह दुर्ग परवन नदी के किनारे बाराँ जिले में स्थित है।
- ➢ कोषवर्धन चोटी पर स्थित होने के कारण शेरगढ़ को कोषवर्धन दुर्ग भी कहते हैं।
- ➢ 1542 ई. मालवा विजय के समय शेरशाह सूरी ने इस दुर्ग पर अधिकार किया तथा जीर्णोद्धार कर शेरगढ़ नाम दिया।
- ➢ यहाँ हुनहुंकार तोप है।
- ➢ यहाँ शेरशाह के गुरु मीर सैयद की मजार है।
- ➢ माना जाता है कि इस दुर्ग का निर्माण नागवंशी शासकों ने करवाया था।
- ➢ दिल्ली शासक फर्रुखशियर ने यह दुर्ग कोटा शासक भीमसिंह को दिया।
- ➢ उम्मेदसिंह के समय कोटा दीवान जालिमसिंह ने इस दुर्ग पर अधिकार रखा तथा अमीर खां पिण्डारी को अंग्रेजों के विरुद्ध जालिमसिंह ने इस दुर्ग में शरण दी।
- ➢ जालिमसिंह ने दुर्ग में'झालाओं की हवेली' का निर्माण करवाया।
- ❖ **शेरगढ़ (धौलपुर)**
- ➢ इसका निर्माण मालदेव राठौड़ के द्वारा करवाया गया था।
- ➢ शेरशाह सूरी ने इसका नाम शेरगढ़ रख दिया था।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vl

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)

SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
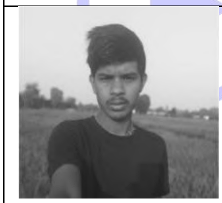	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village- gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil- mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
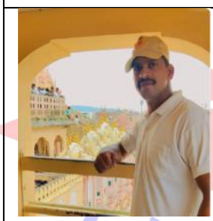	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUN U
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379 HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/lrn74q

Online order करें – ***http://surl.li/rbhbb***

Call करें - 9887809083